नाम: डॉ. सुजाता गुप्ता
विभाग - हिंदी
वर्ग - स्नातक द्वितीय खंड
पत्र - IV
शीर्षक :- केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में प्रकृतिचित्रण
दिनांक - 09.05.2020

केदारनाथ अग्रवाल का प्रकृति चित्रण

हिंदी कविता में प्रगतिवादी कवियों में केदारनाथ अग्रवाल का अनन्य स्थान है। यद्यपि वे प्रगतिवादी कवि रहे हैं, परंतु प्रकृति-चित्रण की जीवन्तता उनके काव्य की सहज पहचान है। जनवादी कवि होने के कारण खेतों और मिट्टी से उनका संबंध विशेष लाघव का रहा है। ग्रामीण प्राकृतिक चित्रण के द्वारा, प्रकृति की 'ठेठ' सुषमा का चित्रण हुआ है। उनकी कविताओं का चित्रण बुन्देलखण्ड की धरती से प्रभावित है और 'केन' नदी का सौंदर्य उनकी कविताओं में झलकता है। केदारनाथ अग्रवाल की 'प्रकृति' आभासीय ना होकर साक्षात् खेत-खलिहान, बगीचों वाली वास्तविक प्रकृति है। यह छायावादी सूक्ष्म सौंदर्य के विपरीत जनवादी धूल-धूसरित खलिहानों का साक्षात् चित्रण है। चने के पौधों की शोभा अलसी के साथ कैसी फब उठती है, इसका उदाहरण देखें :

एक बीते के बराबर / यह हरा ठिगना चना।
बाँधे मुरैठा शीश पर / छोटे गुलाबी फूल का।
सज कर खड़ा है। / पास ही मिल कर उगी है
बीच में अलसी हठीली।
देह की पतली कमर की है लचीली ॥

प्रकृति के यथार्थ चित्रण के पीछे उनकी सामाजिक दृष्टि कार्यरत रहती है। पेड़-पौधे, नदियाँ, पहाड़, फसल आदि सबकुछ उनकी

Scanned with CamScanner

उनकी कविताओं में उपलब्ध मिलता है। कवि ने केन नदी का सुंदर वर्णन एक युवती से किया है :

"नदी एक नौजवान दीठ लड़की है
जो पहाड़ से मैदान में आई है
जिसकी बांह खुली और हंसी से भरी है"

प्रकृति और मनुष्य की आपसी मनोदशा उनके आपसी संबंधों की द्योतक है। प्रकृति वर्णन में प्रकृति अपनी भरी-पूरी दशा के साथ उपस्थित है। वे सामान्य जन से संपूर्ण राग-विरागों के कवि है। प्रगतिवादी काव्यधारा के कवि, अपने प्रकृति चित्रण के कार्यों के लिए प्रसिद्ध हैं। प्रकृति के विभिन्न माध्यमों के द्वारा मनुष्य के जीवन संघर्षों को, अन्याय तथा शोषण का विरोध को चित्रित किया गया है। केदारनाथ अग्रवाल की कविता में प्रकृति व तथा सामाजिक परिवेश अन्तर्गुम्फित है। वे मूलत: मानववादी कवि है। भारतीय ग्रामीण जीवन, लोक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इनकी पैनी दृष्टि जाती है।

मुख्यत: प्रकृति केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में शक्ति, उर्जा, उत्साह तथा जीवन-शक्ति के रूप में दिखलाई देती है। प्रकृति के कारण ही उनकी कविताएँ गहन मानवीय संसर्ग से जुड़ी हुई है।

Scanned with CamScanner